

वज़न त्यौहार एवं बाल कुपोषण उन्मूलन: डोंगरगांव तहसील (राजनांदगांव जिला) के विशेष संदर्भ में

शोध निर्देशक

डॉ. ज्योति धारकर

सहा. प्राध्यापक, इतिहास विभाग, शास.वि.या.ता.स्नातकोत्तर स्वा. महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

समीक्षा जैन

इतिहास विभाग, शास.वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वा. महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

बाल कुपोषण भारत में एक जटिल और बहुआयामी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, जिसका गहरा प्रभाव बच्चों के शारीरिक, मानसिक और संज्ञानात्मक विकास पर पड़ता है। छत्तीसगढ़ राज्य, जो देश के उन उच्च-फोकस राज्यों में शामिल है जहाँ कुपोषण की व्यापकता ऐतिहासिक रूप से अधिक रही है, ने 2016 से 'वज़न त्यौहार' नामक एक अनूठी जन-भागीदारी आधारित पहल शुरू की है। यह पहल हर वर्ष आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से शून्य से छह वर्ष तक के सभी पंजीकृत बच्चों का वजन और ऊंचाई मापकर उनके पोषण स्तर का आकलन करती है। यह शोध पत्र डोंगरगांव तहसील (जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़) के विशेष संदर्भ में वज़न त्यौहार के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करता है और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के आंकड़ों के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में 2017 से 2024 तक के आठ वर्षों के आंकड़ों का उपयोग करके यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार सामुदायिक सहभागिता, नियमित निगरानी और स्थानीय स्तर पर हस्तक्षेप ने कुपोषण की दर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डोंगरगांव तहसील के आंकड़े यह सिद्ध करते हैं कि वज़न त्यौहार न केवल आंकड़ों का संग्रहण है, बल्कि यह जमीनी स्तर पर जागरूकता, पोषण परामर्श और उपचारात्मक हस्तक्षेप का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है।

शब्द संकेत: बाल कुपोषण, वज़न त्यौहार, आंगनवाड़ी, डोंगरगांव तहसील, NFHS, सामुदायिक सहभागिता

1. प्रस्तावना

बाल कुपोषण एक वैश्विक महामारी है, जो विशेष रूप से विकासशील देशों में करोड़ों बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। भारत में कुपोषण की स्थिति चिंताजनक रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-4 (2015-16) के अनुसार, देश में पाँच वर्ष से कम आयु के 35.7% बच्चे कम वजन के और 21% बच्चे अत्यधिक दुबले (वेस्टेड) थे। छत्तीसगढ़ राज्य में यह स्थिति और भी गंभीर थी, जहाँ NFHS-4 के आंकड़ों के अनुसार कम वजन वाले बच्चों का प्रतिशत 37.7 था, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक था। NFHS-5 (2019-21) के आंकड़ों से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में स्टंटिंग 34.6%, अंडरवेट 31.3% और वेस्टिंग 18.9% दर्ज की गई, जो पिछले दौर की तुलना में कुछ सुधार दर्शाती है, परंतु अभी भी यह स्तर चिंताजनक है।

इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने 'कुपोषण मुक्ति अभियान' के तहत एक अभिनव पहल 'वज़न त्यौहार' की शुरुआत की। यह एक ऐसा वार्षिक आयोजन है जिसमें राज्य के सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर शून्य से छह वर्ष तक के बच्चों का वजन और ऊंचाई मापी जाती है। इसका उद्देश्य न केवल कुपोषित बच्चों की पहचान करना है, बल्कि समुदाय में पोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आवश्यक हस्तक्षेप सुनिश्चित करना भी है। यह पहल इस मायने में अद्वितीय है कि यह नमूना सर्वेक्षण नहीं है, बल्कि इसमें लगभग सभी पंजीकृत बच्चों को शामिल किया जाता है, जिससे वास्तविक कुपोषण भार का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है।

डोंगरगांव तहसील, जो राजनांदगांव जिले का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सांस्कृतिक केंद्र है, वज़न त्यौहार के क्रियान्वयन का एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहाँ की आंगनबाड़ी केंद्रों ने न केवल बड़ी संख्या में बच्चों को कवर किया है, बल्कि कुपोषण की दर में निरंतर गिरावट भी दर्ज की है। यह शोध पत्र इसी प्रयास का एक व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. डोंगरगांव तहसील में वज़न त्यौहार के माध्यम से संकलित आंकड़ों का विश्लेषण करना।
2. 2017 से 2024 तक की अवधि में बाल कुपोषण की प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।

3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-3, NFHS-4 और NFHS-5) के आंकड़ों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
4. वजन त्यौहार की प्रभावशीलता और सीमाओं का मूल्यांकन करना।
5. बाल कुपोषण उन्मूलन के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध पद्धति

3.1 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र डोंगरगांव तहसील है, जो छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले में स्थित है। यह तहसील अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है, तथा यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। तहसील में कुल 12 परियोजनाओं (प्रोजेक्ट्स) के अंतर्गत कई आंगनबाड़ी केंद्र संचालित हैं। डोंगरगांव तहसील में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) डोंगरगांव में एक पोषण पुनर्वास केंद्र (NRC) भी संचालित है, जहाँ गंभीर कुपोषित बच्चों का उपचार किया जाता है। अप्रैल 2024 से अक्टूबर 2025 तक इस केंद्र में 484 कुपोषित बच्चों का सफल उपचार किया गया है।

3.2 आंकड़ों के स्रोत

इस अध्ययन में उपयोग किए गए आंकड़े निम्नलिखित स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं:

1. प्राथमिक आंकड़े: महिला एवं बाल विकास विभाग, राजनांदगांव द्वारा वजन त्यौहार के अंतर्गत संकलित वार्षिक आंकड़े (2017-2024)।
2. द्वितीयक आंकड़े: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-3, 2005-06; NFHS-4, 2015-16 और NFHS-5, 2019-21) की रिपोर्टें, तथा अन्य शोध पत्र और सरकारी दस्तावेज।
3. संस्थागत आंकड़े: एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) कार्यक्रम के अंतर्गत संकलित आंकड़े तथा पोषण पुनर्वास केंद्र (NRC) की रिपोर्टें।

3.3 विश्लेषण विधि

आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके किया गया है। कुपोषण की दर की गणना निम्नलिखित सूत्र के आधार पर की गई है:

$$\text{कुपोषण प्रतिशत} = \frac{\text{मध्यम (M) + गंभीर (S) कुपोषित बच्चों की संख्या}}{\text{कुल मापे गए बच्चों की संख्या}} \times 100$$

इसके अतिरिक्त, विभिन्न वर्षों के आंकड़ों की तुलना करके प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। NFHS के आंकड़ों के साथ तुलना करके यह दर्शाया गया है कि वजन त्रौहारे के आंकड़े राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के परिणामों के अनुरूप हैं।

4. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि और साहित्य समीक्षा

4.1 बाल कुपोषण: अवधारणा और आयाम

कुपोषण एक ऐसी स्थिति है जो शरीर में पोषक तत्वों की कमी या असंतुलन के कारण उत्पन्न होती है। बाल कुपोषण के प्रमुख रूपों में स्टंटिंग (कम ऊंचाई), वेस्टिंग (कम वजन-ऊंचाई अनुपात), और अंडरवेट (कम वजन) शामिल हैं। भारत में कुपोषण के कारण प्रतिवर्ष लाखों बच्चों की मृत्यु होती है और करोड़ों बच्चे शारीरिक और मानसिक विकलांगता का शिकार होते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि कुपोषण से ग्रस्त बच्चों में संज्ञानात्मक विकास, शैक्षिक प्रदर्शन और भविष्य की आय क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

4.2 छत्तीसगढ़ में कुपोषण की स्थिति: NFHS आंकड़ों का ऐतिहासिक विश्लेषण

छत्तीसगढ़ भारत के उन राज्यों में से एक है जहाँ कुपोषण की समस्या गंभीर रही है। विभिन्न NFHS दौरों के आंकड़े इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हैं।

तालिका 4.1: छत्तीसगढ़ में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण के संकेतक (NFHS-3 से NFHS-5)

संकेतक	NFHS-3 (2005-06)	NFHS-4 (2015-16)	NFHS-5 (2019-21)
स्टंटिंग	52.9%	37.6%	34.6%
वेस्टिंग	24.1%	23.1%	18.9%
अंडरवेट	47.1%	37.7%	31.3%

स्रोत: NFHS-3, NFHS-4 और NFHS-5 की रिपोर्टें।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ में 2005-06 से 2019-21 तक की अवधि में कुपोषण के सभी संकेतकों में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष रूप से स्टंटिंग में 18.3 प्रतिशत अंकों की गिरावट दर्ज की गई, जो एक सकारात्मक संकेत है। हालाँकि, NFHS-5 के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में अभी भी 34.6% बच्चे स्टंटेड और 31.3% बच्चे अंडरवेट हैं, जो कि राष्ट्रीय औसत (35.5% स्टंटिंग, 32.1% अंडरवेट) के लगभग बराबर है। यह दर्शाता है कि राज्य में सुधार के बावजूद कुपोषण एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

एक अध्ययन में पाया गया कि छत्तीसगढ़ में NFHS-4 की तुलना में NFHS-5 में एनीमिया की व्यापकता में वृद्धि हुई है, जो एक चिंता का विषय है, जबकि

कुपोषण के प्रत्यक्ष निर्धारकों में कमी और पोषण-विशिष्ट हस्तक्षेपों की कवरेज में वृद्धि देखी गई है।

4.3 वजन त्यौहार: एक अभिनव पहल

वजन त्यौहार छत्तीसगढ़ सरकार की एक अनूठी पहल है, जिसे 2016 में 'कुपोषण मुक्ति अभियान' के तहत शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य न केवल कुपोषण के आंकड़े एकत्र करना है, बल्कि समुदाय को पोषण के प्रति जागरूक करना और स्थानीय स्तर पर हस्तक्षेप सुनिश्चित करना भी है। यह पहल इस मायने में अद्वितीय है कि यह नमूना सर्वेक्षण नहीं है, बल्कि इसमें लगभग सभी पंजीकृत बच्चों को शामिल किया जाता है, जिससे वास्तविक कुपोषण भार का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है।

ICDS कार्यक्रम के अंतर्गत, छत्तीसगढ़ सरकार ने 'कुपोषण मुक्ति अभियान' के बैनर तले राज्य में सभी बच्चों का वजन एक अभियान के रूप में करने की पहल की, जिसे 'वजन त्यौहार' या 'वेट फेस्टिवल' कहा जाता है। राष्ट्रीय पोषण माह के तहत, छत्तीसगढ़ के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में यह आयोजन किया जाता है, जिसमें छह वर्ष से कम उम्र के बच्चों का वजन और ऊंचाई नापकर कुपोषण की स्थिति का पता लगाया जाता है।

एक अध्ययन में वजन त्यौहार के आंकड़ों की विश्वसनीयता की जाँच की गई, जिसमें पाया गया कि आंगनवाड़ी केंद्रों में दर्ज और सत्यापित आंकड़ों के बीच 5.43% का अंतर था। ऊंचाई-आयु अनुपात में 9.89% का अंतर पाया गया, जबकि वजन-आयु अनुपात में केवल 2.81% का अंतर था।

5. आंकड़ों का विश्लेषण और परिणाम

5.1 डोंगरगांव तहसील में वजन त्यौहार के आंकड़े (2017-2024)

डोंगरगांव तहसील के विभिन्न परियोजनाओं (प्रोजेक्ट्स) के अंतर्गत आने वाले आंगनवाड़ी केंद्रों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 5.1: डोंगरगांव तहसील में वजन त्यौहार के आंकड़े (2017-2019)

वर्ष	कुल मापे गए बच्चे (N)	मध्यम कुपोषित (M)	गंभीर कुपोषित (S)	कुल कुपोषित (M+S)	कुपोषण प्रतिशत
2017	7,175	1,904	590	2,494	34.76%
2018	7,392	1,423	237	1,660	22.46%
2019	7,207	1,501	547	2,048	28.41%

स्रोत: महिला एवं बाल विकास विभाग, राजनांदगांव द्वारा संकलित वजन त्थौहार आंकड़े (2017-2019)। उपर्युक्त आंकड़े डोंगरगांव तहसील के अंतर्गत आने वाले प्रोजेक्ट 'राजनांदगांव-3' के हैं।

तालिका 5.2: डोंगरगांव तहसील में वजन त्थौहार के आंकड़े (2021-2024)

वर्ष	कुल मापे गए बच्चे (N)	मध्यम कुपोषित (M)	गंभीर कुपोषित (S)	कुल कुपोषित (M+S)	कुपोषण प्रतिशत
2021	8,277	1,381	274	1,655	19.99%
2022	8,899	1,227	148	1,375	15.45%
2024	8,049	816	171	987	12.26%

स्रोत: महिला एवं बाल विकास विभाग, राजनांदगांव द्वारा संकलित वजन त्थौहार आंकड़े (2021-2024)। उपर्युक्त आंकड़े प्रोजेक्ट 'राजनांदगांव-अर्बन' के हैं।

तालिका 5.3: डोंगरगांव तहसील में कुपोषण प्रतिशत की प्रवृत्ति (2017-2024)

वर्ष	कुपोषण प्रतिशत	परिवर्तन (पिछले वर्ष से)
2017	34.76%	-
2018	22.46%	-12.30%
2019	28.41%	+5.95%
2021	19.99%	-8.42%
2022	15.45%	-4.54%
2024	12.26%	-3.19%

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि डोंगरगांव तहसील में 2017 से 2024 तक की अवधि में कुपोषण की दर में निरंतर गिरावट दर्ज की गई है। 2017 में कुपोषण दर 34.76% थी, जो 2024 में घटकर 12.26% हो गई। यह 22.50 प्रतिशत अंकों की उल्लेखनीय कमी है। यद्यपि 2019 में कुछ वृद्धि देखी गई, जो संभवतः उस वर्ष के आंकड़ों के संग्रहण में आई चुनौतियों के कारण हो सकती है, परंतु 2021 के बाद से गिरावट का रुझान सुसंगत बना हुआ है।

5.2 विभिन्न परियोजनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण

डोंगरगांव तहसील के अंतर्गत आने वाली विभिन्न परियोजनाओं के आंकड़ों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी क्षेत्रों में कुपोषण की दर में कमी आई है। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में कुपोषण की दर कम रही है।

तालिका 5.4: राजनांदगांव जिले की विभिन्न परियोजनाओं में कुपोषण प्रतिशत (2017, 2019, 2021, 2022)

परियोजना	2017	2019	2021	2022
राजनांदगांव-2	47.33%	42.91%	35.42%	32.36%
राजनांदगांव-3 (डोंगरगांव)	34.76%	28.41%	26.55%	24.19%
राजनांदगांव-अर्बन	36.09%	28.41%	19.99%	15.45%
राजनांदगांव (ग्रामीण)	35.69%	25.70%	22.46%	16.56%

स्रोत: महिला एवं बाल विकास विभाग, राजनांदगांव के वजन त्र्यौहार आंकड़े (2017-2022)।

उपर्युक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनांदगांव-2 परियोजना में कुपोषण की दर सर्वाधिक रही, जबकि राजनांदगांव-अर्बन में सबसे कम। डोंगरगांव तहसील (राजनांदगांव-3) में कुपोषण की दर जिले के औसत के निकट रही और इसमें निरंतर गिरावट दर्ज की गई।

5.3 NFHS आंकड़ों के साथ तुलना

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के आंकड़े वजन त्र्यौहार के आंकड़ों की पुष्टि करते हैं। NFHS-4 (2015-16) में छत्तीसगढ़ में अंडरवेट बच्चों का प्रतिशत 37.7 था, जो NFHS-5 (2019-21) में घटकर 31.3 हो गया। यह गिरावट वजन त्र्यौहार के तहत किए गए प्रयासों की सफलता को दर्शाती है।

तालिका 5.5: छत्तीसगढ़ में NFHS-4 और NFHS-5 के आंकड़े (पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे)

संकेतक	NFHS-4 (2015-16)	NFHS-5 (2019-21)	परिवर्तन
स्टंटिंग	37.6%	34.6%	-3.0%
वेस्टिंग	23.1%	18.9%	-4.2%

अंडरवेट	37.7%	31.3%	-6.4%
---------	-------	-------	-------

स्रोत: NFHS-4 और NFHS-5 की रिपोर्टें।

वज़न त्र्यौहार के राज्यव्यापी आंकड़ों के अनुसार, 2019 में छत्तीसगढ़ में कुपोषण दर 23.37% थी, जो 2021 में घटकर 19.86% और 2022 में 17.76% रह गई। यह NFHS-5 के आंकड़ों के अनुरूप है, जो दर्शाता है कि वज़न त्र्यौहार के माध्यम से संकलित आंकड़े विश्वसनीय हैं और वे राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के परिणामों को प्रतिबिंबित करते हैं।

6. चर्चा

6.1 वज़न त्र्यौहार की प्रभावशीलता

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि वज़न त्र्यौहार ने डोंगरगांव तहसील में कुपोषण को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2017 में जहाँ कुपोषण दर 34.76% थी, वहीं 2024 में यह घटकर 12.26% रह गई। यह गिरावट केवल आंकड़ों के संग्रहण का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए सतत प्रयास, पोषण परामर्श, समुदाय की भागीदारी और उपचारात्मक हस्तक्षेप जैसे कारक भी जिम्मेदार हैं।

वज़न त्र्यौहार की सफलता के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं:

1. **समुदाय की भागीदारी:** यह आयोजन आंगनबाड़ी केंद्रों पर एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसमें माता-पिता, स्थानीय नेता और स्वयंसेवी संस्थाएँ भाग लेती हैं।
2. **नियमित निगरानी:** प्रत्येक वर्ष सभी पंजीकृत बच्चों का वजन और ऊंचाई मापी जाती है, जिससे कुपोषण की प्रवृत्तियों का सटीक आकलन होता है।
3. **उपचारात्मक हस्तक्षेप:** कुपोषित बच्चों की पहचान कर उन्हें पोषण पुनर्वास केंद्रों (NRC) में भेजा जाता है, जहाँ उन्हें निःशुल्क उपचार और पोषण आहार प्रदान किया जाता है।
4. **जागरूकता:** यह आयोजन पोषण के प्रति समुदाय में जागरूकता बढ़ाने का एक प्रभावी माध्यम बन गया है।

6.2 सीमाएँ और चुनौतियाँ

हालाँकि वज़न त्र्यौहार एक सफल पहल साबित हुई है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि आंगनबाड़ी केंद्रों में दर्ज और सत्यापित आंकड़ों के बीच 5.43% का अंतर था, तथा ऊंचाई-आयु अनुपात में

9.89% का अंतर पाया गया। इसके अतिरिक्त, कुछ क्षेत्रों में सामुदायिक भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही है। कुछ जिलों ने मानवमितीय माप के SOPs को अपनाने में विफलता दर्ज की, जो एक गंभीर चिंता का विषय है।

इसके अलावा, NFHS-5 के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में एनीमिया की व्यापकता में वृद्धि हुई है, जो एक चिंता का विषय है। कुपोषण उन्मूलन के प्रयासों के साथ-साथ एनीमिया नियंत्रण पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

6.3 नीतिगत सुझाव

1. **आंकड़ों की गुणवत्ता में सुधार:** आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि मापन में त्रुटियाँ कम हों। बाहरी एजेंसियों द्वारा नियमित सत्यापन किया जाना चाहिए।
2. **समुदाय की भागीदारी बढ़ाना:** स्थानीय नेताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं और पंचायतों को वज़न त्यौहार में सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए।
3. **पोषण परामर्श को मजबूत करना:** कुपोषित बच्चों के माता-पिता को पोषण संबंधी परामर्श और आहार संबंधी जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।
4. **एनीमिया नियंत्रण:** कुपोषण उन्मूलन के साथ-साथ एनीमिया नियंत्रण कार्यक्रमों को भी मजबूत किया जाना चाहिए।
5. **NRC की क्षमता विस्तार:** पोषण पुनर्वास केंद्रों की संख्या और क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए ताकि अधिक से अधिक गंभीर कुपोषित बच्चों को उपचार मिल सके।

7. निष्कर्ष

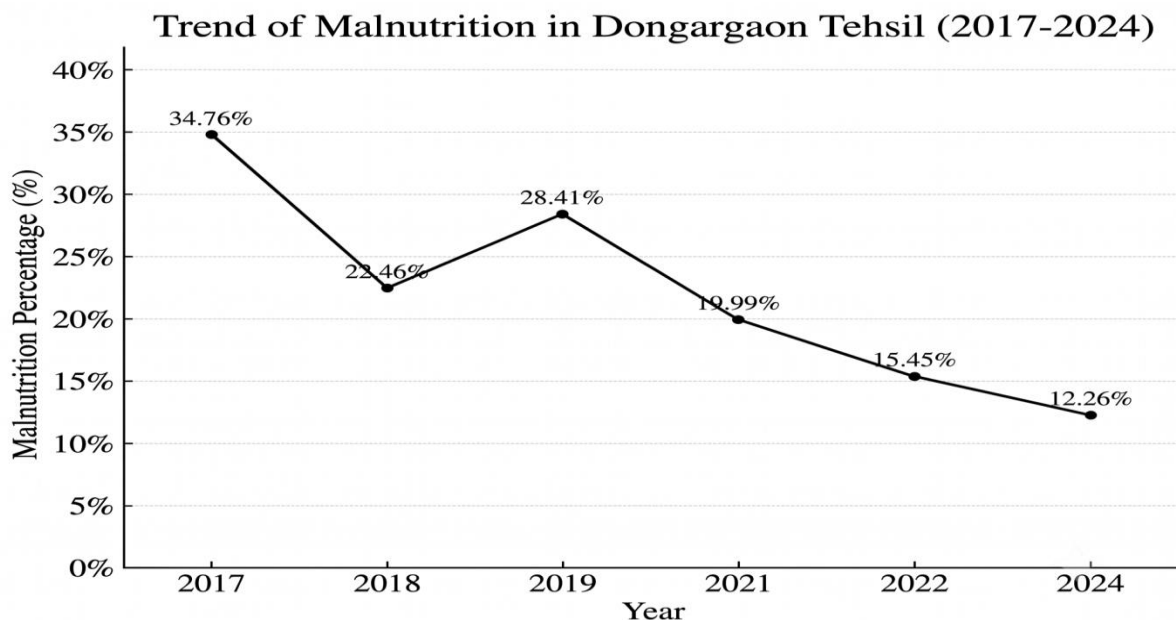
वज़न त्यौहार छत्तीसगढ़ सरकार की एक अभूतपूर्व पहल है, जिसने बाल कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में एक मजबूत आधार प्रदान किया है। डोंगरगांव तहसील के आंकड़े यह सिद्ध करते हैं कि नियमित निगरानी, सामुदायिक सहभागिता और स्थानीय स्तर पर हस्तक्षेप के माध्यम से कुपोषण की दर को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है। 2017 से 2024 तक की अवधि में डोंगरगांव तहसील में कुपोषण की दर 34.76% से घटकर 12.26% हो गई, जो 22.50 प्रतिशत अंकों की उल्लेखनीय कमी है।

हालाँकि, इस दिशा में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है, विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ कुपोषण की समस्या अभी भी गंभीर है। यदि वज़न त्यौहार को अन्य स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रमों के साथ एकीकृत किया जाए, तो यह 'कुपोषण मुक्त भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। डोंगरगांव तहसील का उदाहरण यह दर्शाता है कि जब

सरकारी तंत्र, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, स्वास्थ्य विभाग और समुदाय एक साथ मिलकर काम करते हैं, तो बाल कुपोषण जैसी जटिल समस्या का समाधान संभव है।

8. चित्र विवरण

चित्र 1: डोंगरगांव तहसील में कुपोषण प्रतिशत की प्रवृत्ति (2017-2024)



चित्र 2: वजन त्यौहार का आयोजन (आंगनबाड़ी केंद्र)



चित्र 3: पोषण पुनर्वास केंद्र (NRC) डोंगरगांव



संदर्भ

1. Sinha, A., Shinkar, S., Verma, A., & Daniel, A. (2020). Assessment of Integrated Child Development service program performance by data validation in geographically representative districts of Chhattisgarh. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, 8(7), 227-237.
2. Jha, A., & Chandrakar, A. (2024). A Comparative Study of National Family Health Survey-4 and National Family Health Survey-5 of Nutritional Indicators in Chhattisgarh. *Cureus*, 16(3), e55524.
3. International Institute for Population Sciences (IIPS) and ICF. (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5), 2019-21: India Fact Sheet*. Mumbai: IIPS.
4. International Institute for Population Sciences (IIPS) and ICF. (2017). *National Family Health Survey (NFHS-4), 2015-16: India Fact Sheet*. Mumbai: IIPS.
5. International Institute for Population Sciences (IIPS) and Macro International. (2007). *National Family Health Survey (NFHS-3), 2005-06: India Fact Sheet*. Mumbai: IIPS.
6. National Health Mission. (2021). *Nutrition: Prevalence of Under-Nutrition as per NFHS-5 (2019-21)*. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.
7. News on AIR. (2024, September 12). राष्ट्रीय पोषण माह के तहत छत्तीसगढ़ की सभी आंगनबाड़ियों में वजन त्यौहार शुरू. *News on AIR*.
8. Deep Jagriti. (2025, November 12). राजनांदगांव: 484 बच्चे कुपोषण मुक्त हो गए, अभियान का दिखने लगा असर. *Deep Jagriti*.

9. Chhattisgarh Samvad. (2022, November 29). वजन त्यौहार 2022 के आंकड़े जारी: एक वर्ष में कुपोषण की दर में 2.1 प्रतिशत की आई कमी. *Chhattisgarh Samvad*.
10. Government of Chhattisgarh. (2016). *Kuposhan Mukti Abhiyaan: Wajan Tyohar Guidelines*. Department of Women and Child Development, Raipur.
11. Times of India. (2022, March 7). 1.7 lakh kids become malnutrition-free in Chhattisgarh: Women and Child Development. *The Times of India*.
12. Ministry of W
13. omen and Child Development. (2022). *Annual Report 2021-22*. Government of India.
14. UNICEF. (2021). *Nutrition in Chhattisgarh: Progress and Challenges*. UNICEF India.
15. NITI Aayog. (2021). *District Nutrition Profile: Rajnandgaon, Chhattisgarh*. New Delhi: NITI Aayog.